

## 1. प्राथमिक क्रियाकलाप

मानव के वे क्रियाकलाप जो पर्यावरण पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होते हैं जैसे: भूमि, जल, वनस्पति, भवन निर्माण सामग्री एवं खनिजों के उपयोग के विषय से संबंधित प्राथमिक क्रियाओं के अंतर्गत आते हैं। प्राथमिक क्रियाओं में कृषि कार्य, पशु चारण, मछली पालन, वनों से लकड़ी काटना एवं खनन कार्य सम्मिलित किए जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके पश्चात् ही वह दर्शन, ललित-कलाओं एवं जीवन की उच्चतर आवश्यकताओं की ओर उन्मुख होता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव आर्थिक क्रियाएँ करते हैं। इन क्रियाओं में काफी विविधता पाई जाती है। इसका मुख्य कारण संसाधनों तथा उनके दोहन के लिए उपलब्ध तकनीकों में पाई जाने वाली विभिन्नता है। इसीलिए एक ही जैसी पर्यावरणीय स्थितियों तथा संसाधन संपन्नता होते हुए भी विभिन्न क्षेत्रों के विकास के स्तर में अंतर पाया जाता है। आदिमानव वनों से फल, कंदमूल एकत्र करके एवं वन्य पशुओं का आखेट करके अपना भरण-पोषण करता था। कालांतर में प्रौद्योगिकी के विकास के साथ उत्पादन के संसाधनों जैसे वन, भूमि, खनिज, एवं ऊर्जा के संसाधनों आदि का उपभोग होने लगा। धीरे-धीरे अर्थव्यवस्था का वर्तमान स्वरूप विकसित हुआ।

किसी देश की अर्थव्यवस्था के निर्माण में वहाँ के नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मनुष्य के व्यवसायों की भांति, किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के सभी खंडों के बीच घनिष्ठ संबंध है। अतः एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। उदाहरण के लिए कृषि प्राथमिक खंड की क्रिया है। यह द्वितीयक खंड को कच्चा माल प्रदान करती है। कच्चे माल में विनिर्मित माल तैयार होता है। यदि कृषि खंड विकसित होता है तो किसानों की क्रय शक्ति बढ़ती है और वह द्वितीयक खंड विकसित होता है। यदि प्राथमिक खंड अविकसित रहता है तथा प्राथमिक व्यवसायों में लगे हुए लोगों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ती तो द्वितीयक खंड के उत्पादों की माँग घट जाती है। और अर्थव्यवस्था कमजोर रहती है।

अर्थव्यवस्था का प्रत्येक खंड एक-दूसरे का पूरक भी होता है; उदाहरण के लिए, रासायनिक उर्वरक द्वितीयक खंड का उत्पाद है जो कृषि के विकास के लिए प्रयोग किया जाता है। विकसित कृषि खंड में इन उर्वरकों की माँग अधिक होगी। अतः कृषि विकास का प्रभाव द्वितीयक खंड पर पड़ता है। व्यापार तथा परिवहन, उत्पादन तथा उपभोक्ता को जोड़ने का कार्य करते हैं। विभिन्न सेवाओं में लगे लोग विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन सेवाओं में अर्थव्यवस्था के अन्य खंड लाभान्वित होते हैं।

तापमान, मृदा, वर्षा, आर्द्रता जैसे भौगोलिक कारक कृषि-गतिविधियों और फसल-पैटर्न को सीधे-सीधे प्रभावित करते हैं। सिंचाई, बीज, उर्वरक, कीटनाशक का असर जहाँ सीधे-सीधे कृषि-क्षेत्र की उत्पादकता पर पड़ता है, वहीं ऋण, बीमा, विपणन एवं भण्डारण की सुविधाएँ इस क्षेत्र के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं। कृषि-क्षेत्र की उत्पादकता तकनीकी कारकों से भी प्रभावित होती हैं। ये कृषि-क्षेत्र के आधुनिकीकरण और तकनीकी-उन्नयन को संभव बनाती हैं।

लेकिन, सामाजिक कारक कृषि क्षेत्र की संभावनाओं के दोहन के रास्ते में बड़े अवरोध के रूप में सामने आते हैं। भूमि-सुधार का न होना, जोतों का छोटा आकार, भूस्वामित्व का लेकर उठने वाले प्रश्न और काशतकारी सुधारों को इसके अन्तर्गत रखा जा सकता है। अमेरिका एवं पश्चिमी देशों के संदर्भ में वहाँ होने वाले भूमि-सुधारों के कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण एवं तकनीकी उन्नयन को संभव बनाया है। इसका सकारात्मक असर कृषि-क्षेत्र की उत्पादकता और कृषि-उत्पादों की गुणवत्ता पर देखने को मिलता है। इसके विपरीत भूमि-सुधारों के अभाव को भारतीय कृषि-क्षेत्र की संभावनाओं के दोहन की राह में अवरोध के रूप में देखा जा सकता है। जोतों के छोटे आकार के कारण यहाँ पर नवीनतम तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी को अपनाना आर्थिक दृष्टि से वहनीय नहीं है। साथ ही, अपर्याप्त विपणन एवं भण्डारण-सुविधा के कारण कृषि-उत्पादों का एक अंश उपभोक्ताओं तक पहुँचने के पहले ही बर्बाद हो जाता है। इसके अतिरिक्त कृषि क्षेत्र का विकास श्रम-कारकों और ऊर्जा-आपूर्ति पर भी निर्भर है। यदि कोई देश कृषि-आधारित उद्योगों एवं खाद्य-प्रसंस्करण उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देता है, तो वहाँ कृषि-कार्य के लाभदायक होने की संभावना अधिक होती है। कारण यह है कि कृषि-आधारित उद्योगों का विकास कृषि-उत्पादों में मूल्य-संवर्द्धन को संभव बनाता है। फलतः किसानों के लिए कृषि-उत्पादों की बेहतर कीमत प्राप्त कर पाना संभव होता है।

### प्राथमिक क्षेत्र के उद्योग

प्राथमिक क्षेत्र के उद्योग के अन्तर्गत पशुपालन उद्योग, मत्स्य उद्योग, खनन उद्योग और काष्ठ उद्योग को शामिल किया जाता है। प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों के अंतर्गत ही पशुपालन गतिविधियाँ भी आती हैं। पशुपालन अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक जलवायु की अनुकूलता है। भारत पशुधन की दृष्टि से विश्व का अग्रणी देश है, फिर भी आर्द्र एवं गर्म-जलवायु के कारण यह पशुओं के लिए अस्वास्थ्यकर माना जाता है। इसकी तुलना में ठण्डी और अर्द्धशुष्क जलवायु पशुपालन-क्षेत्र की संभावनाओं

के दोहन की दृष्टि से कहीं अधिक उपयुक्त हैं। इसके अतिरिक्त ऋण, बीमा जैसी आधारभूत-सुविधाओं की उपलब्धता भी इस क्षेत्र के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। स्थानीय स्तर पर चारे की उपलब्धता, विपणन ढांचे का विकसित होना, पशुओं के नस्ल में सुधार के लिए अनुसंधान और विकास पर जोर, परिवहन एवं भंडारण सुविधा का विकसित होना ये सारे कारक इस क्षेत्र की संभावनाओं के दोहन में सहायक हैं। उदाहरणस्वरूप भारत के डेयरी-उद्योग को देखा जा सकता है। सहकारिता आंदोलन से दुग्ध-क्षेत्र को सम्बद्ध कर श्वेत क्रांति लाने की कोशिश की गई। इसके परिणामस्वरूप भारत दुग्ध-उत्पादन में शीर्ष स्थान पर पहुंचने में सफल रहा। इसके बावजूद भारत का डेयरी उद्योग वर्तमान दुनिया में काफी पिछड़ा माना जाता है क्योंकि प्रतिपशु दूध का उत्पादन काफी कम है।

खनन-गतिविधियां भी प्राथमिक क्षेत्र से सम्बद्ध हैं। इनका विकास खनिज-संसाधनों की उपलब्धता के साथ-साथ उन तकनीकों और प्रौद्योगिकियों के विकास पर निर्भर करता है जो इनके दोहन को संभव बनाते हैं। साथ ही, परिवहन और विद्युत सुविधाओं की उपलब्धता भी खनन-गतिविधियों के विकास में सहायक हैं। अफ्रीकी देशों में खनिज संसाधन तो उपलब्ध हैं, लेकिन वह तकनीकी और प्रौद्योगिकी उपलब्ध नहीं है जो इनके दोहन को संभव बनाती है और न ही खनन गतिविधियों में निवेश हेतु पूंजी ही उपलब्ध है। इसी पृष्ठभूमि में पश्चिमी देशों में अफ्रीकी-संसाधनों में बढ़ती हुई रूचि ने अफ्रीका के उपनिवेशीकरण को संभव बनाया है। इस क्षेत्र का विकास बहुत हद तक स्थानीय स्तर पर विनिर्माण-क्षेत्र के विकास पर भी निर्भर है। पिछले कुछ दशकों के दौरान खनन-गतिविधियों के लिए सामाजिक और आर्थिक के साथ-साथ पर्यावरणीय संदर्भ भी महत्वपूर्ण हो गए हैं। स्थानीय मूल निवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर इसके प्रतिकूल असर और इसके पर्यावरणीय दुष्प्रभावों ने जिस स्थानीय असंतोष को जन्म दिया है, उसके परिणामस्वरूप खनन-गतिविधियां बाधित हुई हैं। इसके अतिरिक्त पिछले कुछ वर्षों के दौरान शासन से जुड़े हुए पहलुओं और इस पृष्ठभूमि में होने वाले न्यायिक हस्तक्षेप ने खनन-क्षेत्र के विकास पर प्रतिकूल असर डाला है। भारतीय संदर्भ में इसे देखा जा सकता है।